VAAGDHARA

वातें वाग्धारा नी

दिसम्बर, 2023

अंक 43

VAAGDHARA

प्यारे किसान, भाइयों-बहनों, स्वराज साथियों, संगठन के पदाधिकारियो, स्वराज मित्रों एवं वाग्धारा के साथियों जय गुरु !

दिसम्बर माह में लोकतंत्र उत्सव के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं| हम सब की जिम्मेदारी है कि हम किस प्रकार से हमारे लोकतंत्र को मजबूत कर सके, किस प्रकार से ऊर्जावान रूप से चुनाव में जुड़ पाए ये हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है और मै आशा करता हूं कि हम सभी लोग अपनी जिम्मेदारी चुनाव में निभाएंगे |

दीपावली के बाद से हम सभी लोग कृषि कार्य में लगे और हमारी आने वाली रबी फसल की तैयारी के साथ ही खरीब फसल की उपज का रख- रखाव में लग गये है, मैं आपसे जो खरीब की उपज है उसको लेकर के आपसे जरूर चर्चा करना चाहूंगा| हमारी फसलों का दो -तीन प्रकार से संधारण होता है एक उसे हम बीज के रूप में आगामी फसल के लिए संभाल के रखते हैं, कुछ हम हमारे भोजन के लिए रखते हैं तथा जो हमारा बचा हुआ हिस्सा होता है उसे हम बाजार में बेच देते हैं , हमारी नगद की जरूरतो को पूरा करने के लिए, हमारे खर्चों के भुगतान के लिए, हमारे कपड़े 12 महीने के खर्चे उसको पूरा करने के लिए, तीनों विषयों पर हमारे लिए समझना बहुत जरूरी होता है, कि क्या हम बीच में कुछ मजबूत बीज संभल के रखते हैं या छानने के बाद जो कचरा बचता है, उसको बीज के रूप में रख देते हैं अगर हम अच्छा बीज नहीं रखेंगे, तो हमारी अगली फसल अच्छी नहीं होगी, अगर हम साफ किया हुआ भोजन नहीं करेंगे, तो हम हमारे शरीर को मजबूत नहीं कर पाएंगे ,और अगर हम सही भाव देखकर के फसलों को नहीं बेचेंगे, जल्दी-जल्दी में पैसों की आवश्यकता को देखकर के जल्दी में बिना भाव जाने बेचेंगे तो हम हमारा नुकसान कर देंगे | यह तीनों ही विषय महत्वपूर्ण है बीज के संधारण में, चुकि समय-समय पर वाग्धारा एवं मेरे द्वारा सभी साथियों के साथ चर्चा में बताया जाता है कि हम जिससे बीज लेते हैं उसे वापस उचित बीज दे, जैसा लिया था वैसा ही लौटाए छान करके, क्योंकि वह बीज है| अपने घर पर भी जो रखे है तो उसे छान करके रखे, बीन करके रखे ,खराब बीज अगर हम साथ में रखेंगे तो जो अच्छा बीज है वह भी खराब हो जाएगा| बीज को रखने के हमारे जो परंपरागत तरीके हैं - नीम की पत्तियों के साथ, राख के साथ या बुटो को लटकाकर के जो भी हमारे तरीके है उसके अनुरूप ही हम हमारे बीज को रखें, भोजन के लिए भी हमें बिन करके, सफाई करके और वही हमारे परंपरागत तरीको से हमारे कबलो में भरना या जैसा भी हमारा तरीका है वो हमे काम में लेना चाहिए| बाजार के लिए हमारा देसी साहूकार महत्वपूर्ण है हम उसके लिए ना नहीं कहते परंतु अखबारों में भाव आते हैं| हमारे वाग्धारा के स्वयं सेवक आपसे मिलते है वो जरूर पता करें, क्या भाव चल रहा है और हम बहुत कम भाव में हमारी फसल को ना बेच दे यह हमारी जिम्मेदारी है अगर हम ध्यान रखेंगे तो हम हमारे परिवार को सुरक्षित रख पाएंगे |

मैं इसी प्रकार से रबी की फसल के लिए भी आपसे आग्रह करना चाह रहा हूं कि पहले हमारे कुछ क्षेत्र में नहरों का पानी आ गया है या नहरों का पानी नहीं है तो हम डिजल इंजन से चलाकर के पानी पिलाते है और खेती करते है, परंतु हम यह समझते हैं कि पानी का कोई मूल्य नहीं होता और उसे बहुत खुला छोड़ देते हैं इससे हमारी मिट्टी बहकर के जाती है हमारा बीज भी एक जगह एकत्रित हो जाता है बाद में फसल उगाने में भी समस्या होती है अगर हम क्यारी बनाकर के, छोटी- छोटी क्यारी बनाकर के सिंचाई करेंगे तो पानी कि भी बचत होगी, मिट्टी का कटाव भी कम होगा और बीज की भी बचत होगी | मेरा आग्रह है कि अगर हम खरपतवार के लिए ,खरपतवार में जो पोषक चीजे उसे ध्यान से देखें और उसे संभाले और खरपतवार नियंत्रण के लिए कोई दवा न छाट करके हम हमारे देसी तरीको से निराई - गुड़ाई करके अंतर कृषि कार्य कर के अगर हम संभालते हैं तो हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा अन्यथा हम हमारा ही नुकसान कर देंगे |

मेरे साथियों भाइयों -बहनों आप लोगों ने स्वराज की परिकल्पना को समझाया जाना है स्वराज स्वयं के किए बिना नहीं होता और अगर हमारा कोई साथी अगर नहीं करता है और केवल मात्र ज्ञान बांटता है तो हम सब दोषी है अगर मेरा कोई साथी कभी यह बात करते हुए मैं जब सुनता हूं कि हमने गेहूं के अंदर दवाई छाटने में समय व्यतीत किया तो हृदय में बहुत दर्द होता है कि हमारी कथनी और करनी में अंतर है तो भाइयो मेरा आपसे यही कहना है कि कथनी और करनी में कोई अंतर नही करे क्योंकि यह स्वराज के सिद्धांत के विरुद्ध है इसी आग्रह के साथ हम हमारे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण की सुरक्षा का ध्यान करें| लोकतंत्र के उत्सव के लिए आपको शुभकामनाएं तथा आने वाली फसलों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं |

धन्यवाद

जय- गुरू, जय- स्वराज !!!

आपका अपना

जयेश जोशी

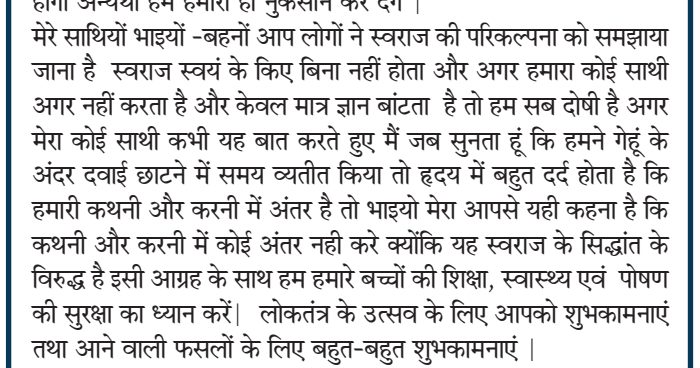

बीज स्वराज

गेहूं की पारंपरिक खेती हेतु मानक संचालन प्रक्रिया

पृष्ठभूमिः मध्यप्रदेश, गुजरात और राजस्थान के त्रिवेणी संगम क्षेत्र की प्राकृतिक जलवायु (गर्म व शुष्क) तथा क्षेत्र में सिंचाई सुविधा विस्तार के कारण गेहूं के रकबे में लगातार वृद्धि हो रही है । यहाँ उत्पादित गेहूं चमकदार, धब्बे रहित व मोटे दानों के उत्पादन में उपयुक्त है । जिसके कारण रबी सीजन में गेंहू की खेती के प्रति धीरे-धीरे रुझान बढ़ रहा है । परंतु बाजार के प्रभाव के चलते हमारे क्षेत्र के किसान अंधाधुंध मात्रा में रासायनिक खाद एवं कीटनाशक उपयोग कर रहे है । जिससे एक ओर किसान मजबूरन कर्ज में फंस रहा है, तो दूसरी ओर जहरीले उत्पादन से अपनी मिट्टी और सेहत दोनों को नुकसान पहुंचा रहा है । इस लेख में हम जानेंगे की कैसे परंपरागत कृषि पद्धतियों को अपनाकर जहर और रसायन मुक्त तथा पोषण से युक्त गेहूं का उत्पादन किया जा सकता है ।

गेहूं की परंपरागत खेती के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए ।

- **मिट्टीः** गेंहू की खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली दोमट, रेतीली मिट्टी जो मध्यम या भारी हो, सबसे अधिक उपयुक्त होती है ।
- **खेत की तैयारीः** गेहूं की परंपरागत खेती के लिए बुवाई से 15 दिन पहले खेत में 5 टन प्रति बीघा पकी हुई गोबर की खाद बिखेर दे तथा गोबर खाद बिखेरने के बाद खेत की अच्छी जुताई करें एवं पाटा चलाकर खेत को समतल कर लें। गोबर खाद को ट्राइकोडर्मा युक्त बनाने के लिए 2 क्विंटल पकी हुई गोबर की खाद में 2.5 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर मिलाकर बुवाई से 10-15 दिन पहले मिला लें एवं ढेर को अच्छी तरह जूट (टाट) के बोरे से या पुवाल से अच्छी तरह ढक दे । इस प्रकार तैयार हुई उपचारित खाद को गेहूं की बुवाई से पहले खेत में फैला दे । इससे गेंहू में फफूंद और कवक जनित रोगों की रोकथाम प्रभावी ढंग से हो जाती है ।
- **बीजोपचारः** गेहूं के बीज की बुवाई से पहले बीजो को राइजोबियम और पी.एस.बी. कल्चर से उपचारित कर लेना चाहिए इससे गेहूं की फसल में लगने वाले रोगों से मुक्ति मिलती है और उत्पादन में भी वृद्धि होती है ।

उपचार विधि- बुवाई के 3 से 5 घंटे पहले बीज को उपचारित करें, इसके लिए एक किलोग्राम बीज एक साफ बर्तन में लें, इसमें पानी के छींटे मार कर गीला कर लें, इसमें 5 से 10 ग्राम पी.एस.बी. कल्चर, 5 से 10 ग्राम एजेटोबेक्टोर कल्चर डाल कर हाथो की सहायता से बीजों पर एक हल्की पर्त चढ़ा लें, तत्पश्चात इन बीजो को छाया में सुखा लें, सूखने के तुरन्त बाद बीज की बुवाई सुबह या शाम के समय में करें, यह ध्यान में रखे कि उपचारित बीज को तेज धूप में नहीं बोना चाहिए ।

- **बीज की मात्रा व बुवाई का तरीकाः** एक बीघा खेत के लिए 15 से 20 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है । खेत की मिट्टी में गेंहु की बुवाई लगभग 7 से 10 सेंटीमीटर गहराई में की जानी चाहिए इससे बीज में लगने वाले रोग कम लगते है । कतार से कतार में बुवाई करते हुए दो कतार के मध्य में 19 से 23 सेंटीमीटर की दुरी बनाये रखें ।
- **खरपतवार प्रबंधनः** गेहूं की फसल में खरपतवार को नियंत्रित करने के लिए दो बार निराई-गुड़ाई करना लाभप्रद होता है। प्रथम निराई-गुड़ाई बुवाई के 20 से 25 दिन के बाद एवं दूसरी 40 से 45 दिन के बाद तथा तीसरी 60 से 65 दिन के बाद की जानी चाहिए, समय पर निराई-गुड़ाई करने से अवांछित खरपतवारों से छुटकारा मिलता है और मिट्टी में उपयुक्त वायु संचार बना रहता है, यदि कृषक नियमित रूप से फसल चक्र अपनाये और समय पर खेत तैयारी तथा बीजों की बुवाई करे तो कई प्रकार की खरपतवार से छुटकारा पा सकता है ।
- **सिंचाई प्रबंधनः** गेहूं की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि उचित समय पर इसमें सिंचाई की जाए । गेहूं की क्राउन (छत्रक) जड़ों तथा बालियों के निकलने की अवस्था में सिंचाई अति आवश्यक होती है, इस समय सिंचाई न करने पर उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। सामान्यतः गेहूं की फसल के लिए सामान्यतः 4-5 सिंचाई की आवश्यकता होती है। जिसमें भारी मिट्टी में 4 एवं हल्की मिट्टी में 5 सिंचाई पर्याप्त होती है।

किसान द्वारा निम्नलिखित तालिका के अनुसार सिंचाई की जानी चाहिएः-

फसल प्रक्रिया कि अवस्थायें	बुवाई बाद के दिन	6 सिंचाई हेतु पानी की उपलब्धता पर	4 सिंचाई हेतु पानी की उपलब्धता पर	2 सिंचाई हेतु पानी की उपलब्धता पर	1 सिंचाई हेतु पानी की उपलब्धता पर
शीर्ष जड़ बनने की अवस्था	18-21	पहली सिंचाई	पहली सिंचाई	पहली सिंचाई	पहली सिंचाई
कल्ले फूटने की अवस्था	35-40	दूसरी सिंचाई	दूसरी सिंचाई	-	-
गाँठ बनने की अवस्था	50-55	तीसरी सिंचाई	-	-	-
बालियों के आने की अवस्था	65-70	चौथी सिंचाई	तीसरी सिंचाई	-	-
दुधिया अवस्था	80-85	पांचवी सिंचाई	चौथी सिंचाई	दूसरी सिंचाई	-
दाना पकाने की अवस्था	90-95	छठवी सिंचाई	-	-	-

- **गेहूँ में होने वाले रोगः**

दीमकः दीमक गेहूं की फसल को किसी भी अवस्था में नुकसान पहुंचा सकती है। दीमक की समस्या सिंचित क्षेत्र की अपेक्षा वर्षापोषित क्षेत्रों में अधिक होती है। पूरी तरह से पक्की गोबर खाद के प्रयोग से भी दीमक के प्रकोप की संभावना बढ़ जाती है।	**बचाव का तरीकाः** ★ एक बीघा खेत में 1 किलोग्राम नीम के बीजों को कूटकर बुवाई से पहले बिखेरने से दीमक के प्रकोप में कमी आती है । ★ चूना और गंधक का मिश्रण जमीन में डालने से दीमक के प्रकोप में कमी आती है। ★ पौधों के मूल में लकड़ी की राख डालने से भी दीमक के प्रकोप में कमी आती है। ★ मक्के के भुट्टे से दाना निकालने के बाद जो गिडीयां बचती है उनको मिट्टी के घड़े में इक्कट्ठा करके घड़े को खेत में इस प्रकार गाढे के घड़े का मुंह जमीन से कुछ बाहर निकला हो। घड़े के ऊपर कपड़ा बांध दे और पानी भर दें। कुछ दिन में ही घड़े में दीमक भर जाती है तब इसे निकालकर नष्ट कर दे, इस प्रकार के घड़े को खेत में 100-100 मीटर की दूरी पर गाड दे और 5 बार यह प्रक्रिया करने से पुरे खेत में दीमक समाप्त हो जावेगी। ★ सुपारी के आकार की हिंग को एक कपड़े में लपेटकर और पत्थर में रखे खेत की ओर से पानी की नाली में रख दें, इससे दीमक नष्ट हो जाएगी । ★ जला हुआ ऑयल को सिंचाई के लिए बनी पानी की नाली से डालने पर दीमक से बचाव होता है ।
आर्मी वॉर्मस: इस कीट की इल्ली पौधे विशेषकर उसके नाजुक अंगों को रात्रि के दौरान खाती है और दिन के समय छिपी रहती है। ये पत्तों और बालियों को भी नुकसान पहुंचाती है।	★ आर्मी वॉर्मस को खत्म करने के लिए 5 किलोग्राम नीम के पत्तों को बारीक कूटकर पानी में अच्छे से उबाल ले और इस घोल को 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से आर्मी वॉर्मस का प्रकोप खत्म हो जाता है। ★ एक लीटर दशपर्णी को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से भी आर्मी वॉर्मस का प्रकोप खत्म हो जाता है।
ब्राउन व्हीट इल्ली, एफिड्सः	★ गेहूं के साथ थोड़ी सी मात्रा में सरसों या कुसुम का बीज मिलाकर अंतर्वर्ती फसल के रूप में बोने से ब्राउन व्हीट इल्ली और एफिड्स का प्रकोप खत्म हो जाता है । ★ 100 लीटर पानी में 15 लीटर गौ मूत्र और 15 किलो ग्राम टुकड़े-टुकड़े किए नीम के पत्तों को डालकर 7 दिन तक रखे और 7 दिन के बाद एक एकड़ में फसल पर छिड़काव करने से ब्राउन व्हीट इल्ली और एफिड्स नष्ट हो जाती है ।

कटाईः गेंहू का दाना जब पक जाये या दांत से दाने को तोड़ने पर कट की आवाज आए तो समझ जाना चाहिए कि फसल कटाई के लिए तैयार है, कटाई के बाद फसल को सुखाना चाहिए और उसके बाद थ्रेशिंग कर लेना चाहिए, थ्रेशिंग के बाद गेंहू का भण्डारण करने से पहले भी अनाज को अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए ।

- **गेहूं भण्डारण और कीटों से सुरक्षाः** गेहूं में अक्सर घुन लग जाता है, इसकी रोकथाम के लिए हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए, जैसेः
- परम्परागत रूप से गेहूँ के भंडारण से पहले पूरी तरह साफ कर सुखा लेना चाहिए, अनाज में नमी का स्तर 8 से 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए |
- गेहूं को राख या नीम की पत्तियों को मिलाकर भण्डारण करने से भी कीटों का प्रकोप नियन्त्रित होता है |

5 दिसम्बर विश्व मृदा दिवसः " मिट्टी और पानी, जीवन का स्त्रोत है "

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 5 दिसंबर को पूरी दुनिया में विश्व मृदा दिवस मनाया जायेगा । इस वर्ष विश्व मृदा दिवस 2023 का विषय " मिट्टीः जहां भोजन शुरू होता है। इसका मतलब है कि यह वह मिट्टी है जहां से हमें भोजन मिलता है। दूसरे शब्दों में, मिट्टी हर चीज़ की आरंभकर्ता है। "मिट्टी और पानी, जीवन का स्त्रोत है" हम मिट्टी के महत्त्व को स्वयं भी समझे और दूसरों को भी समझाए । मिट्टी, हमारी पृथ्वी का एक महत्वपूर्ण भाग है और मिट्टी की सुरक्षा मानवता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

हम इस लेख में विश्व मृदा दिवस के महत्व, मुद्दे, समस्याएं और इसके समाधान पर विचार करेंगे ।

मिट्टी का महत्वः मिट्टी हमारी पृथ्वी का एक अभिन्न हिस्सा है, जो जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है । मिट्टी वन्यजीवों, पौधों, और हमारे लिए जीवनदायक स्त्रोत प्रदान करती है। मिट्टी में कई प्रकार के पोषण तत्व होते हैं जो पौधों के विकास और प्रकृति के संतुलन के लिए आवश्यक होते हैं। मिट्टी, जल के बहाव, पर्यावरण के संतुलन और जलवायु परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हाल के वर्षों में, विभिन्न कारणों से मिट्टी से जुड़ी कई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। जनसंख्या वृद्धि अनुपयोगी खेती तकनीक, और अनैतिक उपयोग के कारण मिट्टी की गुणवत्ता में कमी हो रही है। यह कहना गलत नही होगा कि हम प्रकृति की इस अमूल्य धरोहर का उपयोग नहीं दोहन कर रहे है जिससे मिट्टी की उर्वरता कम हो रही है, और विभिन्न आपदाओं जैसे जलवायु परिवर्तन, अतिवर्षा और सूखे जैसी पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। मिट्टी और पानी वह माध्यम है जिसमें पौधे बढ़ते हैं और आवश्यक पोषक तत्व प्राप्त करते हैं। स्वस्थ मिट्टी एक प्राकृतिक फिल्टर के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जमीन में प्रवेश करते समय पानी को शुद्ध करती है और संग्रहित करती है। वर्षा आधारित कृषि प्रणालियों में 80 प्रतिशत फसल भूमि पर होती है, जो वैश्विक खाद्य उत्पादन में 60 प्रतिशत का योगदान देती है। ये प्रणालियाँ प्रभावी मिट्टी की नमी प्रबंधन प्रथाओं पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं।

एकीकृत मिट्टी और जल प्रबंधन प्रथाएं आवश्यक पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करती हैं, मिट्टी ही पृथ्वी पर जीवन का समर्थन करती हैं और पारिस्थितिकी तंत्र के लचीलेपन को बढ़ाती हैं। स्वस्थ मिट्टी वायुमंडल से कार्बन को अलग करके कार्बन सिंक के रूप में कार्य करती है, इस प्रकार जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और शमन प्रयासों दोनों में योगदान देती है।

मिट्टी का उपयोगः मिट्टी का उपयोग कृषि, उद्योग, और वन्यजीव संरक्षण में होता है। मिट्टी के उपजाऊपन को बनाए रखने, प्रदूषण को कम करने, और जल संवहन को बढ़ावा देने में सहायक होती है। मिट्टी का संरक्षण व सही प्रबंधन करना आवश्यक है ताकि यह हमें सबसे अच्छा उत्पाद दे सके और विविधातापूर्ण खाद्य समृद्धि को बनाए रख सके ।

पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए क्या करेः मिट्टी और पानी दोनों आवश्यक संसाधन हैं, मिट्टी और पानी खाद्य उत्पादन, पारिस्थितिकी तंत्र और मानव कल्याण के लिए आधार प्रदान करते हैं। उनकी अमूल्य भूमिकाओं को पहचानते हुए, भावी पीढ़ियों के लिए यह हमारी जिम्मेदारी है कि मिट्टी और पानी का हम संरक्षण और प्रबंधन करे ।

- **मिट्टी कटाव को रोकेः** मिट्टी का कटाव पानी को संग्रहित करने व निकालने तथा पानी को साफ करने की क्षमता को रोकता है। मिट्टी का कटाव बाढ़, भूस्खलन और रेत या धूल भरी आंधियों के खतरे को बढ़ा देता है ।
- **अवैध खनन और निर्माण को रोकेः** पत्थर खदान, खनिज खदान, विभिन्न निर्माण कार्यों के कारण भूमि के उपयोग में बदलाव हो रहा है, जिससे जैव विविधता की हानि हो रही है। अतः इसे रोकने की आवश्यकता है।
- बेहतर मिट्टी और जल प्रबंधन से सूखे, बाढ़ और रेत/ धूल भरी आंधियों जैसी चरम जलवायु घटनाओं का सामना करने एवं भूमि की क्षमता में सुधार होता है ।
- **मिट्टी संरक्षण के प्रति समझ बढ़ानाः** लोगों को मिट्टी के महत्व के प्रति समझाना आवश्यक है। उन्हें हमें यह बताना चाहिए कि मिट्टी के अव्यवस्थित उपयोग से कैसे मिट्टी ख़राब हो रही है और कैसे इसे बचाया जा सकता है।
- **कृषि प्रणाली में सुधारः** अनुपयोगी खेती तकनीकों का उपयोग कम करके मिट्टी एवं जल संरक्षण के लिए सही तकनीकों को अपनाकर, बहाव पद्धति से सिंचाई नहीं करते हुए टपक सिंचाई या फव्वारा सिंचाई को अपनाकर मिटटी और पानी दोनों का संरक्षण किया जा सकता है।
- **मिट्टी संरक्षण की योजनाएंः** सरकारें और जन संगठन/ समुदाय मिट्टी संरक्षण की विभिन्न पद्धतियों जैसे खेतो में मेडबंदी, वृक्षारोपण आदि को अपनाना और उन्हें लागू करना चाहिए।
- **जैव विविधता को बढ़ावाः** वन्यजीवों का संरक्षण, विभिन्न पौध प्रजातियों का संरक्षण और विकास, वनों का विकास आदि के माध्यम से जैव विविधता की रक्षा के लिए कदम उठाने चाहिए।
- **शिक्षा और प्रेरणाः** लोगों को मिट्टी एवं जल संरक्षण के लिए जागरूक करने के उद्देश्य से शिक्षा कार्यक्रम और प्रेरणा सत्र आयोजित करने चाहिए ।

समुदाय से अपेक्षाः

इस वर्ष वाग्धारा संस्था द्वारा राजस्थान, मध्यप्रदेश व गुजरात राज्यों के त्रिवेणी-संगम पर स्थित 1041 गांवों में विश्व मृदा दिवस का आयोजन स्थानीय संगठनों के सहयोग से किया जा रहा है। इसलिए संगठनों, समुदाय के सभी सदस्यों व हितधारकों के लिए जरुरी है की सभी मिट्टी के महत्व को समझे साथ ही समुदाय के अन्य लोगो को मिट्टी संरक्षण के लिए प्रेरित करें । समुदाय के सभी व्यक्ति अपने गाँव में, फला में मिट्टी व जल की पूजा करें और मिट्टी व जल के संरक्षण के विभिन्न उपायों पर चर्चा करते हुए उनको अपनाने के लिए शपथ ले । स्थानीय जन प्रतिनिधियों, ग्राम पंचायतों को भी सम्मिलित करते हुए ग्राम स्तर पर मिट्टी और जल संरक्षण संरचनाओं के उपाय, रोजगार गारंटी योजना के माध्यम से करने के लिए मांग करें । अधिक से अधिक संख्या में पौधा रोपण करें, स्थानीय फसलों के उत्पादन को बढ़ावा दे । रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग प्रतिबंधित करें, इसके स्थान पर जैविक उर्वरक तथा कीट नियंत्रक को बनाये एवं उपयोग को बढ़ावा दे । इस दिन के माध्यम से हम लोग अपने आस-पास के क्षेत्र की मिट्टी संरक्षण के उचित सतत प्रयास की सामूहिक शपथ ले ।

गेहूं का उत्पादन प्रति बीघा 5 से 8 क्विंटल होता है I

शिक्षा एवं विकास स्वराज : बच्चों की परीक्षा पूर्व तैयारी

आप सभी ने दीपावली का त्यौहार अपने परिवार के साथ बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया होगा | हमे उम्मीद एवं आशा है कि आप सभी अभिभावक, परिवार में बच्चो सहित सकुशल होंगे, दीपावली की छुट्टियों के बाद बच्चें नियमित रूप से स्कूल जाने लगे है, लेकिन अब एक बड़ी ज़िम्मेदारी का काम हमारे बच्चों के संदर्भ में आ रहा है, इस जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए इस माह के अंक में हम बात करेंगे " **बच्चों की परीक्षा पूर्व तैयारी** " जैसा की हम सभी जानते है परीक्षा से पूर्व, परीक्षा की तैयारी करना उतना ही आवश्यक है, जितना इंसान को भोजन- पानी की आवश्यकता होती है । अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ नजदीक आ रही है । बच्चों द्वारा अब तक कि गई पढ़ाई के अनुसार विषय वस्तु पर अपनी तैयारी कर रहे होंगे, अगर बच्चों का ध्यान अभी तक परीक्षाओं की ओर नहीं गया है तो हम सभी की जिम्मेदारी है की अब बच्चों का ध्यान परीक्षा की तरफ आकर्षित करें ताकि बच्चे अच्छे अंको के साथ सफल हो सके ।

बच्चों की परीक्षा पूर्व तैयारी में शामिल विभिन्न स्तर :

शिक्षक	अभिभावक	बड़े भाई–बहिन	ग्राम स्वराज समूह	बाल स्वराज समूह
• इन परीक्षाओं में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जिसमे अध्यापक समय पर पाठ्यक्रम को पूर्ण करवाए, साथ ही बच्चों के साथ परीक्षाओं को लेकर रिविजन के साथ पूर्व तैयारी पर फोकस करें, ताकि बच्चे विषय वस्तु को अच्छे से समझ कर अपनी तैयारी को विद्यालय स्तर पर जारी रखे। • साथ ही अंग्रेजी एवं गणित जैसे कठिन विषय पर शिक्षक बच्चों के साथ विशेष कालांश ले, ताकि बच्चों को यह कठिन विषयों पर बेहतर समझ बनाने में सहायक साबित होंगे। • इसी कडी में जो बच्चे कक्षा में कमजोर है उन पर विशेष ध्यान दे, ताकि उन बच्चों के सीखने के स्तर को बेहतर किया जा सके। • इस प्रक्रिया से उन सभी बच्चों में आत्मविश्वास पैदा किया जा सकता है और परीक्षा के प्रति जो डर बच्चों में होता है उसको पूर्ण रूप से दूर किया जा सकता है।	• जिस प्रकार विद्यालय समय में शिक्षक की जिम्मेदारी होती है, उतनी ही जिम्मेदारी घर पर अभिभावक की होती है, क्योंकि आप भली–भांति जानते है की बच्चे विद्यालय में 6 घंटे पढाई करते है,इसके पश्चात् 18 घंटे बच्चे अपने घर अभिभावकों के साथ समय बिताते है, इन 18 घंटों में अब पढाई पर अभिभावकों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। • क्योंकि आप जानते है की इस माह से बच्चों की अर्द्धवार्षिक परीक्षा आयोजित की जाएगी और परीक्षा पूर्व तैयारी करवाना अति–आवश्यक है। • इससे बच्चे अच्छे नंबर से पास होंगे, साथ ही बच्चों से घर पर पढाई करवाने से उनके पढने लिखने की क्षमताओं का तेज गति से सुधार होगा, इस पर आप सभी अभिभावक ध्यान दे एवं अपने बच्चों का पढने लिखने में सहयोग करें।	• जिस प्रकार विद्यालय समय में शिक्षक की जिम्मेदारी होती है, उतनी ही जिम्मेदारी घर पर अभिभावक की होती है, क्योंकि आप भली–भांति जानते है की बच्चे विद्यालय में 6 घंटे पढाई करते है,इसके पश्चात् 18 घंटे बच्चे अपने घर अभिभावकों के साथ समय बिताते है, इन 18 घंटों में अब पढाई पर अभिभावकों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। • क्योंकि आप जानते है की इस माह से बच्चों की अर्द्धवार्षिक परीक्षा आयोजित की जाएगी और परीक्षा पूर्व तैयारी करवाना अति–आवश्यक है। • इससे बच्चे अच्छे नंबर से पास होंगे, साथ ही बच्चों से घर पर पढाई करवाने से उनके पढने लिखने की क्षमताओं का तेज गति से सुधार होगा, इस पर आप सभी अभिभावक ध्यान दे एवं अपने बच्चों का पढने लिखने में सहयोग करें।	• ग्राम स्वराज समूह लम्बे समय से निःस्वार्थ भाव से गाँव की प्रगति के लिए कार्य कर रहा है, इस प्रग्रती में शिक्षा ग्राम विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है। • अपने गाँव के समस्त पढने वाले बच्चों की अर्द्धवार्षिक परीक्षा नजदीक आ रही है द्य इसके लिए ग्राम स्वराज समूह की जिम्मेदारी है की गाँव के बच्चों को परीक्षा पूर्ण तैयारी की तरफ ध्यान आकर्षित करें। • बच्चों की परीक्षाओं को लेकर अभिभावक एवं बच्चों के साथ नियमित चर्चा करें, साथ ही सभी संगठन के सदस्य इससे अपनी जिम्मेदारी समझते हुए गाँव स्तर पर बैठक में अभिभावकों एवं बच्चों को शामिल करते हुए इस विषय पर विशेष ध्यान दे। • गाँव के सभी पढने वाले बच्चे परीक्षा पूर्व अच्छे से तैयारी करके अच्छे अंको से सफलता अर्जित करें।	• ग्राम स्वराज समूह लम्बे समय से निःस्वार्थ भाव से गाँव की प्रगति के लिए कार्य कर रहा है, इस प्रग्रती में शिक्षा ग्राम विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है। • अपने गाँव के समस्त पढने वाले बच्चों की अर्द्धवार्षिक परीक्षा नजदीक आ रही है द्य इसके लिए ग्राम स्वराज समूह की जिम्मेदारी है की गाँव के बच्चों को परीक्षा पूर्ण तैयारी की तरफ ध्यान आकर्षित करें। • बच्चों की परीक्षाओं को लेकर अभिभावक एवं बच्चों के साथ नियमित चर्चा करें, साथ ही सभी संगठन के सदस्य इससे अपनी जिम्मेदारी समझते हुए गाँव स्तर पर बैठक में अभिभावकों एवं बच्चों को शामिल करते हुए इस विषय पर विशेष ध्यान दे। • गाँव के सभी पढने वाले बच्चे परीक्षा पूर्व अच्छे से तैयारी करके अच्छे अंको से सफलता अर्जित करें।

खरीफ बीज का परिवार एवं समुदाय स्तर पर संरक्षण

राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात के किसानो विशेषकर आदिवासी किसानो की आजीविका का मुख्य आधार खेती और पशुपालन रहा है। **बीज** प्रकृति की अनमोल धरोहर है जिस पर खेती की बुनियाद टीकी है. हजारो वर्षो से हमारे पूर्वजो ने बाली, फल, फली व कंदमूल आदि को बड़े परिश्रम से जाँच परख कर खाने योग्य बनाने की तकनीक विकसित की है. उनके ही परिश्रम से खेती, किसानी और पशुपालन की संस्कृति का जन्म हुआ है। बेहतर गुणवत्ता वाले बीजो को पहचानकर उन्हें वर्षभर सुरक्षित रखने के तरीको का विकास हुआ। हमारे आदिवासी समुदाय के द्वारा पीढ़ियों से बीजो का संरक्षण किया जा रहा है और यह हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग भी बन गया है बीजो को पहचानने और उन्हें संरक्षित करने का ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता रहा, बढ़ते बाजारवाद के बावजूद समुदाय आज भी अपने परंपरागत ज्ञान को संजोकर रखे है और यह ज्ञान **बीज स्वराज** के रूप में विकसित हुआ है। यह हमारे क्षेत्र के आदिवासी किसानो की संस्कृति ही है जिन्होंने सैकड़ो प्रकार के बीजो को सहेजा है बल्कि बीजो को हमेशा संरक्षित रखने के लिए बीज संरक्षण की विभिन्न तकनीके भी विकसित की है। परन्तु बढ़ते बाजारवाद के कारण संकर बीजो का चलन प्रारंभ हुआ। साथ-साथ ही अन्य आदानो जैसे सिंचाई, रासायनिक उर्वरक और कीटनाशको पर खर्च भी बढ़ता गया जिससे किसान लालच में आकर एक ओर कर्ज के जाल में फंस गया तो दूसरी ओर खेत की मिटटी और पानी भी विषैला होता गया।

ऐसी परिस्थितियों में हमें पुनः अपने स्थानीय और गुणों से भरपूर देशी बीजो को संरक्षित करना होगा। यह कार्य हम आज से और अभी से कर सकते है। हाल ही में हम सभी ने खरीफ फसल के रूप में मक्का, उड़द, चवला, अरहर, मूंगफली, तिल, कांग, रागी, कुरी, समा, चीना आदि उत्पादित की है। फसल की गहाई और उड़ाई के बाद प्राप्त हुए बीजो की ग्रेडिंग कर ले और समान आकार, प्रकार, रंग और बिना किसी कीट या रोग से ग्रसित बीजो को लेकर विभिन्न पद्धतियों के माध्यम अपनाकर संगृहीत करते है।

1. **कबला** : बांस या अन्य लकड़ी के माध्यम से परंपरागत बीजो के संग्रहण के लिए पात्र "कबला" बनाये जाते है फिर इन्हें मिटटी और गोबर से लीप दे फिर इन कबला को धुप में सुखाकर इनमे मक्का, धान, गेंहू किया जाता है. संग्रहण से पहले कबले के तले में नीम की पत्तियां बिछाकर बीज डाले बीच बीच में नीम के पत्तो की बिछाकर फिर बीज डाले इस प्रकार कबले को ऊपर तक भर दे तत्पश्चात सबसे उपरी तले पर फिर नीम की पत्तियों को बिछा दे और फिर सबसे ऊपर सागवान या तेंदू पत्ते से ढँक देते है और अंत में गोबर और मिटटी के मिश्रण से लीप कर पैक कर देते है.

2. **मटके में संग्रहण**: विभिन्न प्रकार की दालें जैसे उड़द, मुंग, चना, तुअर, झालर, तिलहन जैसे बीज जो अनाज की अपेक्षा कम मात्रा में लगते है उन्हें अलग अलग आकार के मटके में रखते है। मटको में बीज को रखने से पहले धुप में सुखा लेते है इससे किसी भी प्रकार की नमी या फिर कीट नहीं लगते है। सरक्षित किये जाने वाले बीजो को भी धुप में सुखाते है और उसके बाद बीजो को राख में मिलाकर मटके में भर देते है और अंत में मटके के उपरी भाग को गोबर और मिटटी के मिश्रण से लीप कर पैक कर देते है। जब भी बुवाई करना होती है या बीज की आवश्यकता होती है तब उपरी भाग को हटाकर बीज लेते है। इस प्रकार 2 से 3 वर्ष तक बीज सुरक्षित रहता है।

3. **फल को साबुत लटकाकर**: कुछ फसल जैसे लोकी, तुरई, झुमकी आदि के बीजो का उनके पके हुए फलो में ही ज्यादा सुरक्षित रखा जा सकता है।
इसी प्रकार पकी हुई लौकी को सुखाकर उसका गुदा निकालकर

उसे खोखला कर देते है और फिर अच्छे से साफ करके उसमे अन्य सब्जी प्रजाति के बीजो को भरकर कपडे से बंद करते है और उसके ऊपर गोबर व गोमूत्र का लेप कर देते है। इससे बीज सुरक्षित रहता है।
4. फलीदार सब्जियों के बीजों जैसे बेंगान, लोबिया, मक्का आदि के बीजो के संरक्षण के लिए उसकी गुच्छी बनाकर किसी ऐसी

जगह टांग देना चाहिए जहाँ धुप व हवा लगती रहे परन्तु बारिश से बचाव हो सके।
5. प्याज और लहसुन के बीजो को सहेजकर रखने के लिए इनकी गठिया बांधकर इन्हें हवादार परन्तु अँधेरे कमरे में टांगने से सुरक्षित रहते है।
6. सरसों और अरंडी के तेल का प्रयोग भी इसी तरह के बीजो को सुरक्षित रखने के उपयुक्त होते है। इसके लिए बीजो को तेल के साथ तब तक मिलाते है जब तक की बीज तेल से चमकने न लग जाये।
7. अदरक, हल्दी, अरबी, मुसली आदि को बीज के लिए सहेजने के लिए खेत के एक कोने में गड्ढा खोदकर उसमे बीज रखकर घांस-फुंस से ढक देते है।
8. **सागवान या टिक के पत्ते पर बीजो को चिपकाकर**: जिन फलो में चिकनाई होती है जैसे टमाटर, ककड़ी आदि के बीजो को सागवान के पत्ते पर छिड़क देते है यह बीज पत्ते पर चिपक जाते है। इन पत्तो को किसी ऊँचे स्थान पर लटकाकर रख दिया जाता है। जब अगले सीजन में बीज की जरुरत होती है तो पत्ते को रगड़कर बीजो को निकाल सकते है और बुवाई कर सकते है। इससे बीज हमेशा सुरक्षित रहता है।

इन सभी प्रकार से बीज संरक्षण करने से घर पर ही शुद्ध देशी बीज उपलब्ध हो जाता है। इन तरीको को अपनाने से बीज में किसी प्रकार का कीट नहीं लगता है। बाजार से बीज लाने की जरुरत नहीं पड़ती है बीजो के मामले में स्वनिर्भरता आती है।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई- माही

! राम -राम जय गुरु !

साथियों पिछले माह हमने बात कि थी की किस प्रकार से आज का युवा कुछ बुरी संगतों में आकर असमय काल का ग्रास बन रहा है जिसमे सबसे ज्यादा दोपहिया वाहन तेजी से चलाने के कारण अपना जीवन असमय में ख़त्म कर रहे है क्या ये सही है ? अपने परिवार की समस्त खुशियां एक पल में तबाह करना और उससे भी ज्यादा माता -पिता ,पत्नी और बच्चो के लिए जीवन भर के लिए चुभन छोड़ जाना | साथियों मेरा आग्रह स्पष्ट है की सबसे पहले हमारे संगठनो को जाग्रत होना होगा और गाँव के युवाओ को समझाना होगा की क्या महत्त्व है जीवन का ? इसके अलावा ग्राम स्वराज संगठन एवं कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन को भी स्थानीय प्रशासन से बात करनी होगी जहाँ पर भी ऐसे दुर्घटना मोड़ जहाँ पर आए दिन हादसे होते रहते है या रोड के आस- पास की वनस्पति जो काफी बढ़ी हुई है जिसके कारण सामने से आने वाला वाहन स्पष्ट रूप से शाम और रात्रि के समय नहीं दिख देता है वहाँ पर कार्य करने की आवशकता है ! इस क्रम में मेरी मुलाकात समुदाय साथी से हुई जिसने मुझे बताया की अभी कुछ दिन पहले शाम के समय में अपनी दो पहियां वाहन लेकर निकला और देवदा से आगे एक चार पहियां वाहन ने डिपर नहीं दिया और मेरे आँखों में इतनी तेज रौशनी हुई जिससे मेरा संतुलन बिगड़ने से बाईक सहित झाड़ियों में जाके गिर गया | ऐसे कई कारण हो सकते है अतः मेरा इस संस्करण के माध्यम से ग्राम पंचायतो के सरपंच गण से भी निवेदन है की मुख्य मार्गो पर जहाँ दुर्घटना होने कि संभावना हो वहां इस प्रकार कि वनस्पति कि साफ़ - सफाई करवायें | इसके अलावा बड़े वाहन चालको से भी निवेदन है की चाहे वाहन छोटा हो या बड़ा आप डीपर का प्रयोग आवश्यक रूप से करे |

सच्चा स्वराज- साथियों पिछले संस्करण में हमारी चर्चा हुई थी इस बार हमारे गाँवो की विकास योजना ग्राम पंचायतो में बनाई गयी है जिसमे संगठन, समुदाय, सहजकर्ताओं कि भूमिका महत्वपूर्ण रही है,परंतु 25 नवम्बर तक विधानसभा चुनाव को लेकर समुदाय

05 साल के विकास को लेकर व्यस्त है और होना भी चाहिए, क्योंकि हम हमारे आने वाले 05 सालो का भविष्य तय कर रहे है ,इसमें जब आपके पास यह संस्करण पहुंचेगा तब आप से यही निवेदन रहेगा कि हमारे द्वारा ग्राम सभा में जितने भी ग्राम विकास के प्रस्ताव जमा करवाए गए है उसकी प्रतिपुष्टि अवश्य रूप से कर लेवें क्योंकि हमारे कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन विश्वास बांध के बैठे है की समुदाय एक स्वर में अपने अधिकारों को लेकर आगे आएगा जो वाकई सुखद होगा और होना भी चाहिए !

विगत 05 वर्ष आपके साथ बहुत अच्छे रहे शुरुआत में भले कुछ संगठन के सदस्य आगे पीछे हुए परंतु आज हर संगठन में हमारे साथ शुरुआत से जुड़े साथियों की सूचि ज्यादा है जो यह दर्शाता है कि संगठन की वास्तविक रूप से आवश्कता थी | साथियों इस बार हम एक बड़े बदलाव में जाने के लिए प्रयासरत है अब नई सरकार के साथ हम स्थानीय बीजो को लेकर एक आग्रह पत्र के माध्यम से पुनः अवगत करवाएँगे और हमारे स्थानीय बीजो को संगठन के माध्यम से बीज स्वराज के लिए सम्पूर्ण रूप से प्रयास करेंगे |

सच्ची खेती- मृदा दिवस प्रतिवर्ष 5 दिसंबर को मनाया जाता है। यह दिवस मृदा स्वास्थ्य और उपयोग के महत्व को बढ़ावा देने का उद्देश्य रखता है और लोगों को मृदा की सुरक्षा,स्वास्थ्य और प्रबंधन के महत्व के बारे में जागरूक करने का कारण बनता है। मिट्टी पृथ्वी पर हमारे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह वनस्पतियों को ऊर्जा,पोषण और स्थिरता प्रदान करने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार

की जीवों को आश्रय और आहार प्रदान करती है। मृदा दिवस के अवसर पर वाग्धारा संस्था द्वारा विशेष कार्यक्रम समुदाय में आयोजित किये जाते हैं जिसमें मृदा स्वास्थ्य,उपयोग और संरक्षण से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। इस दिन हमारे गाँव के सक्षम समूह कि बहने, ग्राम स्वराज समूह सदस्य, कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन के साथी और वाग्धारा परिवार के सदस्य भूमि संरक्षण के उपायों और तकनीकियों को अपनाने के लिए जागरूकता बढ़ाने के साथ ही कई पहलुओं को आगे बढ़ाने के विषयो पर विस्तृत चर्चा करते हैं। इस दिन को विशेष दिवस मनाकर हम अपने आस-पास की मृदा की सुरक्षा और प्रबंधन में योगदान कर सकते हैं ताकि हम स्वस्थ भूमि की सुरक्षा कर सकें और आने वाली पीढ़ियों को भी इसका लाभ हो सके। इस बार फिर से हम एक सन्देश पुरे क्षेत्र में देंगे की हमारी मिट्टी की आज क्या स्तिथियाँ है और हमे किन विषयो पर और जोर देने की जरुरत है |

सच्चा बचपन- साथियों शीत ऋतू का मौसम शुरू हो गया है और आने वाले समय में वह अपने चरम पर होगा और इस मौसम में बच्चो, बड़े बूढ़ों का विशेष ध्यान रखना होगा जिसमे मेरा अनुभव यह रहा है कि हम हमारे स्थानीय खाद्यान जिसको हम भूलते जा रहे है जो बच्चो के लिए काफी सहायक हो सकते है क्योंकि स्थानीय व्यंजनों का महत्त्व सामाजिक,सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से होता है। यहां कुछ कारण हैं जिनसे स्थानीय व्यंजनों का महत्त्व समझा जा सकता है स्थानीय व्यंजन एक क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक हो सकता है। ये व्यंजन स्थानीय रूप, रस और परंपराओं को दर्शाते हैं जो हमारे क्षेत्र के लोगों की भूमिका और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को साझा करते हैं। स्वास्थ्य की द्रष्टि से स्थानीय व्यंजनों में स्थानीय पदार्थों का उपयोग होता है जो क्षेत्र के मौसम और भूमि की विशेषताओं के हिसाब से बनाए जाते हैं। ये बच्चो एवं हमारे शरीर के लिए उपयोगी होते हैं और हम सब को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। सामाजिक द्रष्टि से स्थानीय व्यंजन समुदाय को एक साथ आने वाले त्यौहारों और समारोहों में एक दुसरे से हमको जोड़ते हैं। ये खाद्य सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने में एक माध्यम के रूप में कार्य करते हैं और लोगों को एक-दूसरे के साथ जुड़ने का एक मौका प्रदान करते हैं। अंत में विशेष रूप से पर्यावरण संरक्षण कि द्रष्टि से देखा जाए यो स्थानीय व्यंजनों को तैयार करने में अक्सर स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हैं ।

इसी कारण से स्थानीय व्यंजनों का महत्त्व होता है और इनका संरक्षण, प्रोत्साहन करना अति-आवश्यक है।परन्तु वर्त्तमान में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में यह संदेश नहीं पहुच पा रहा है तो आज यह आवश्कता है कि हम एक स्वर में हमारी सभी पारंपरिक व्यवस्थाओ को युवा पीढ़ी से साझा करे ताकि यह परम्पराए जीवित रह सके |

सच्चा स्वराज

वर्मी कम्पोस्ट इकाई

नमस्कार साथियों उम्मीद एवं आशा है कि आपने दीपावली का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया होगा | इस माह में हम सब मिलकर विश्व मृदा दिवस 5 दिसम्बर 2023 को हर गाँव में मनाना है | इस वर्ष विश्व मृदा दिवस 2023 का विषय " मिट्टीः जहां भोजन शुरू होता है। इसका मतलब है कि यह वह मिट्टी है जहां से हमें भोजन मिलता है। दूसरे शब्दों में, मिट्टी हर चीज की आरंभकर्ता है। हम सबको हमारे खेतों में देशी खाद का उपयोग अधिक से अधिक करते हुए मिट्टी के स्वास्थ्य को भी बनाये रखना है इसके साथ ही हम इस अंक में जानेगें कि केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित वर्मी कम्पोस्ट सबंधी योजना के बारे में | इस योजना के माध्यम से हम अपने घरों में स्वयं वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर अपनी फसल का उत्पादन बढ़ाने के साथ ही हमारे खेत कि मिट्टी का स्वास्थ्य का भी बराबर ध्यान रख कर मिशाल पेश कर सकते है तो आइये हम जानते है कि यह योजना 2005-06 से उद्यानिकी विभाग के माध्यम से संचालित की जा रही है इस योजना में राज्य सरकार कि 40 प्रतिशत व केंद्र सरकार का 60 प्रतिशत हिस्सा राशि है | यह योजना व्यक्तिगत आधार पर संचालित की जा रही है :

सरकार द्वारा वर्मी कम्पोस्ट इकाईयों की स्थापना पर अनुदान

इस योजना के अंतर्गत वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन हेतु जमीन पर 30 फीट लम्बाई x 8 फीट चौड़ाई x 2.5 फीट गहराई के आकार का पक्के निर्माण के साथ वर्मी कम्पोस्ट इकाई लगाने के लिए कुल खर्च का 50 प्रतिशत एवं ज्यादा से ज्यादा 50000/- रूपये प्रति इकाई अनुसार अनुदान मिलता है । पोलीथिन शीट से बनी एक वर्मी बेड जिसका आकार (लम्बाई 12 फीट x चौड़ाई 4 फीट x 2 फीट गहराई) के साथ लगाने के लिए कुल लागत का 50 प्रतिशत एवं अधिकतम 8000-/ रूपये प्रति इकाई के आधार पर अनुदान मिलता है ।

वर्मी कम्पोस्ट योजना का लाभ लेने के लिए पात्रता :

1. वर्मी खाद उत्पादन हेतु जैविक खेती करने वाले किसानो को प्राथमिकता दी जाती है ।
2. किसान के पास न्यूनतम 0.4 हैक्टेयर स्वयं की भूमि हो और वह बागवानी फसलों की खेती करता हो ।
3. किसान के पास पर्याप्त पशुधन, पानी एवं खेत में फसल का बचा हुआ व्यर्थ पदार्थ की उपलब्धता हो ।

(क) वर्मी खाद उत्पादन अनुदान के लिए आवश्यक नियमः

1. पक्का वर्मी कम्पोस्ट इकाई का आकार 30 फीट लम्बाई x 8 फीट चौड़ाई x 2.5 फीट गहराई का होना आवश्यक है ।
2. वर्मी कम्पोस्ट इकाई कि छाया के लिए स्थानीय तथा स्थायी प्रकृति कि सामग्री उपयोग में लेना अनिवार्य है जैसे : स्टील, सीमेंट कि चदर अथवा पत्थर की पट्टी आदि।
3. पक्के शेड की बीच में से ऊंचाई कम से कम 10 फिट और किनारे से 8 फिट होना अनिवार्य है ।
4. एक इकाई के लिये कम से कम 60 किलोंग्राम केंचुए सरकार द्वारा उपलब्ध करवाए जायेंगे ।
5. केचुएं कृषि प्रशिक्षण केंद्र , रजिस्टर्ड गैर सरकारी संस्थान/ गौशाला आदि से ही उपलब्ध करवाए जायेंगे ।
6. प्रत्येक बेड में 400-400 ग्राम ट्राइकोडर्मा, पीएसबी, एजोटोबेक्टर कल्चर एवं 1 किलोग्राम नीम की खल प्रयोग में ली जावें।
7. वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने के लिये सहायक सामग्री जैसे- कुट्टी की मशीन, दांतली, पंजा, झारा, पाईप, फावड़ा, परात आदि उपकरण सरकार द्वारा उपलब्ध कराये जायेंगे ।
8. वर्मी कम्पोस्ट का अनुदान कृषि विभाग के अधिकारी द्वारा भौतिक सत्यापन करने के बाद ही जारी किया जायेगा ।
9. वर्मी कम्पोस्ट का अनुदान लाभार्थी किसान के बैंक खाते में किया जायेंगा ।
10. वर्मी कम्पोस्ट इकाई को कम से कम तीन वर्ष तक नियमित रूप से चलाये रखने के लिये शपथ-पत्र देना अनिवार्य होगा ।
11. अनुदानित इकाई स्थल पर स्थाई रूप से कृषक का नाम, पिता का नाम, राष्ट्रीय बागवानी मिशन अन्तर्गत अनुदानित वर्मी कम्पोस्ट इकाई एवं अनुदानित वर्ष अंकित कराना अनिवार्य है ।
12. कृषि विभाग द्वारा कार्यशील इकाई का फोटोग्राफ कार्यालय रिकॉर्ड में संधारित करके रखा जायेगा ।

(ख) पोलीथिन / प्लास्टिक वर्मी बेड अनुदान के लिए नियम :

1. वर्मी बेड का आकार 12 फुट लम्बाई व 4 फुट चौड़ाई एवं 2 फीट गहराई होना अनिवार्य है ।
2. वर्मी बेड के उपर अस्थाई छाया की व्यवस्था अनिवार्य है ।
3. वर्मी बेड एक इकाई के लिये 10 किलोंग्राम केंचुए उपलब्ध करवाए जायेंगे ।
4. कृषक द्वारा निर्धारित आकार एवं प्रमाणित मार्का कि वर्मी बेड लिये जाने पर अनुदान राशि का भुगतान लाभार्थी किसान के बैंक खाते में 15 दिवस के भीतर करना अनिवार्य है ।
5. प्रत्येक किसान को वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन की तकनिकी जानकारी लेने के लिए प्रशिक्षण लिया जाना अनिवार्य है ।

आवेदन कि प्रक्रिया : किसान द्वारा वर्मी कम्पोस्ट इकाई के लिए ऑनलाइन आवेदन ई-मित्र पर निः शुल्क किया जा सकता है ।

किसान के पास निम्नलिखित दस्तावेज होने आवश्यक है :-

जन-आधार कार्ड की प्रति,जमाबंदी की प्रति,बैंक पासबुक की प्रति,मोबाईल नंबर

जैविक खेती (Organic Farming)

हमारे किसानों द्वारा जैविक विधी से उत्पादित खाद्य सामग्री को बढावा देने हेतु सरकार द्वारा जैविक खेती के लिए जैविक परियोजना का समुदाय हित में संचालन किया जा रहा है | इस योजना में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को उनके खर्च का 50प्रतिशत एवं अधिकतम 10000/-रूपये प्रति हैक्टेयर प्रति लाभार्थी किसान एवं अधिकतम 4 हैक्टेयर तक तीन वर्षो में 40:30:30 के अनुपात में अनुदान दिया जाता है ।जिसमे प्रथम वर्ष में 4000/-रूपये, द्वितीय व तृतीय वर्ष में 3000/-रूपये दिए जाते है ।

योजना के लिए पात्रता :

1. किसान के पास स्वयं की कम से कम एक हैक्टेयर कृषि भूमि के साथ ही पशुधन, पानी एवं कार्बनिक पद्धार्थ की उपलब्धता होनी चाहिए ।
2. किसान लगातार तीन वर्ष तक चयनित खेत में जैविक विधि से फसल उत्पादन लेने पर सहमति प्रदान करना अनिवार्य है ।
3. किसान जैविक खेती प्रमाणीकरण के लिये प्रमाणीकरण संस्था से जुड़ने के लिये सहमत होना आवश्यक है ।
4. किसान जैविक खेती के लिए चयनित खेत में फसल चक्र की सभी फसलों को जैविक कृषि क्रियाओं के आधार पर सहमत होना आवश्यक है ।
5. जैविक खेती कार्यक्रम में पहले से जुड़े जैविक गांव व जैविक खेती से जुड़े किसानों को प्राथमिकता दी जायेगी ।

अनुदान प्रक्रिया:

जैविक खेती करने के लिए कम से कम 50 हैक्टेयर कृषि भूमि के किसानो का समूह होना जरूरी है ।

जैविक खेती करने के लिए आवशयक खाद सामग्री कि लागत का 50 प्रतिशत अधिकतमएवं 10हजार रूपये प्रति हैक्टेयर की दर से अधिकतम 4 हैक्टेयर के लिए तीन वर्षो में 40:30:30 के अनुपात में अनुदान दिया जायेगा :-

किसानो को जैविक खेती का अनुदान जैविक खेती प्रमाणीकरण संस्था के सत्यापन के बाद ही किया जायेगा ।

किसानों को जैविक खेती का अनुदान लाभार्थी किसान के बैक खाते में किया जायेगा।

जैविक खेती लिये खेत के चारों तरफ पेड़ो/ झाड़ियों कि बाड़ करना जरूरी है ।

किसानों को जैविक खेती करने के लिए तीन वर्ष का अनुबंध करना आवशयक है ।

जैविक खेती चयनित क्षेत्र में जैविक सामग्री का उपयोग किया जायेगा। इस क्षेत्र में रासायनिक सामग्री का उपयोग वर्जित रहेगा। जहां तक संभव हो किसान को खेत पर (On Farm) जैविक सामग्री तैयार कर उपयोग में लेना जरूरी है ।

आवेदन कैसे करे : -

किसान द्वारा वर्मी कम्पोस्ट इकाई के लिए ऑनलाइन आवेदन ई-मित्र पर निः शुल्क किया जा सकता है ।

जैविक खेती के लिए आवेदन हेतु आवेदक के पास निम्नलिखित दस्तावेज होने आवश्यक है :-

- **जन आधार कि प्रति**
- **पते के प्रमाण की प्रति**
- **बैंक पासबुक की प्रति**
- **किसान द्वारा शपथ पत्र**
- **जमाबंदी की प्रति**
- **मोबाईल नंबर**

परिवार स्तर पर प्रयास : किसान परिवारों को पात्रता के अनुसार आवेदन करना होगा |

किसान के पास आवश्यक दस्तावेज होना जरूरी है |

समुदाय स्तर पर प्रयास : सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के लिए समुदाय अपने स्तर पर पात्र किसानों का डाटा एकत्रित कर ज्यादा से ज्यादा किसानों को लाभान्वित करवाने का प्रयास करना होगा |

सरकार द्वारा प्रयास : सरकार द्वारा गाँव स्तर पर प्रत्येक तिन माह में अभियान चलाकर ज्यादा से ज्यादा पात्र किसानों को लाभान्वित करना |

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – हिरण

वाते पत्रिका के संदर्भ में समुदाय की राय शुभकामनाऐ |

मेरा नाम चन्द्र कला है| मैं जब से वाग्धारा में सक्षम समूह से जुड़ीं हूं तब से समूह की मासिक बैठकों में भाग लिया है| मैं सक्षम समूह में सचिव के पद पर भी कार्य कर रही हूं । हमे मासिक बैठक में वाते पत्रिका दी जाती है । **वाते पत्रिका** पढ़कर मैने खेती करने के तरीके, आजीविका, स्वास्थ्य के बारे में नयी- नयी जानकारी सीखी तथा उसे अपने जीवन में भी उपयोग लिया । साथ ही स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न प्रकार के बीमारी से जुड़े देसी इलाजों को सिखा हर माह मौसम के अनुरूप विभिन्न प्रकार कि औषधियों के बारे में भी वाते पत्रिका में पढ़ कर जानकारी मिल जाती है, इसके साथ ही जैविक दवाई कैसे बनाई जाती है दवाई में उपयोग होने वाली विभिन्न प्रकार के चीजो का भी उल्लेख पत्रिका में मिल जाता है । जैविक दवाई के उपयोग से खेती के उत्पादन में बहुत फायदा हुआ है । पत्रिका से मुझे मिट्टी के कटाव के बारे में भी जानकारी मिली जिसे मेड़ पर विभिन प्रकार के पेड़ लगाए जिससे मिट्टी कटाव भी बचा और अधिक पेड़ भी लगे । विभिन्न प्रकार के मौसमी बीमारीयों एवं उनके लक्षण और रोकथाम को लेकर भी बहुत जानकारी पत्रिका से मिल जाती है वो भी बहुत उपयोगी है| संगठन से जुड़ने के बाद हम लोगों ने बीज का आदान- प्रदान करना भी सिखा है, जो बीज हमारे पास उपलब्ध नहीं होते वो भी हमें इधर- उधर से मिल जाता है । वाते पत्रिका से मुझे देसी बीजों को सहेजना और उनका भण्डारण करने का तरीका भी सीखने को मिला, साथ ही देसी बीज को किन बर्तनों में भण्डारण करना चाहिए यह भी सिखा ।

मोटा अनाज क्या है? कैसे उपयोग में लिया जाता है यह भी पत्रिका से सिखा, जिसमे कुरी, बटी, कांग उपयोग के बारे में वाते पत्रिका से सिख मिली इन अनाजों को कैसे सहेजा जाए और कैसे इनकी खेती की जाए यह भी पत्रिका में पढ़ कर सिखा । पशुओं में होने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों और उनके रोकथाम के बारे में भी अधिक जानकारी मिली साथ ही पशुओं में होने वाले बीमारी के लिए टीकाकरण की भी जानकारी वाते पत्रिका से प्राप्त हुई । पशु शेड पशुओं के अनुकूल कैसे होने चाहिए उसकी जानकारी भी पत्रिका में समय पर दी जाती है जैसे चारा कुण्डी बनी हो ताकि चारा बिगड़े न पूरा उपयोग में आए साथ ही पशुओं को साफ़ पिने और खाने की व्यवस्था हो ताकि उन्हें बीमारीयों से बचाया जा सके । मुर्गी पालन और बकरी पालन के विभिन्न प्रकार के नए तरीके भी सीखे जिसे आजीविका मजबूत हुई एवं हमने पूर्ण रूप से जैविक खेती करना एवं समुदाय के अन्य लोगो को भी बताना शुरू किया है ताकि जो हमने सिखा वह अन्य लोग भी सीखे । इसके साथ ही समागम के बारे में देखा जिसमें जल, जंगल, जमीन, जानवर व बीज, सच्चा बचपन, सच्चा स्वराज एवं जलवायु परिवर्तन से आये बदलावों के समाधान को लेकर समागम के कार्यक्रम में देखा और पढ़ा भी साथ ही मुझे समागम में भाग लेने का अवसर मिला । इसके साथ ही देशी बीज और संस्कृति के बारे में जानकारी मिली और आगे भी में वाते पत्रिका पढ़ती रहूँगी ।

चन्द्र कला देवी
6261077840
गाँव का नाम : थेथम बड़ी
ब्लॉक – थांदला (म.प्र.)

वाते पत्रिका के संदर्भ में समुदाय कि राय

मेरा नाम दीता है मैं कई सालो से वाग्धारा संस्था के साथ जुड़ा हुआ हूँ| संस्था से जुड़ने के बाद मैंने कई प्रकार की नई –नई पद्धतियां सीखी जिसमें मिश्रित खेती ,जैविक दवाई बनाना शामिल है, इसके साथ ही मैं लम्बे समय से वाते पत्रिका पढ़ रहा हूँ| जब से मैंने वाते पत्रिका पढ़ना शुरू किया है, मैंने खेती और आजीविका के विभिन्न विषय सीखे है और सीखे हुए तरीकों से आजीविका में बढ़ोतरी भी की है । मैंने वाते पत्रिका पढ़कर औषधियों के बारे में जानकारी ली जिसे छोटी -मोटी बीमारी में देशी औषधियों का उपयोग करने लगा हूं साथ ही गाँव के लोगों भी बताता हूं ।

वाते पत्रिका के माध्यम से घर बैठे –बैठे हर माह अलग –अलग सरकारी योजनाओं के बारे में भी जानकारी मिल जाती है और दुसरो को भी देता हूं| जैविक दवाई बनाने की विधि एवं जैविक दवाई कौन से माह में कौन सी उपयोग में लेनी है यह जानकारी भी पत्रिका से मिल जाती है। मै भी दसपर्णी और जीवा अमृत खुद बनाकर खेती में प्रयोग करता हूं साथ ही अन्य लोगो को भी बताता हूं । पशु पालन के बारे में जानकारी एवं पशुओं कि देखरेख कैसे की जाती है, साथ ही मौसम अनुरूप उनके टीकाकरण की जानकारी पत्रिका से मिल जाती है ।

वाते पत्रिका से मुझे अलग - अलग प्रकार की जानकारी हर माह प्राप्त होती है। पत्रिका में मैंने समागम के बारे में भी पढ़ा जिसमें स्वराज की बाते साफ़–साफ समझ में आई। वाते पत्रिका पढ़कर मुझमें बहुत बदलाव आया है और मैने भी सीखी हुई तकनीकी को अन्य लोगों को भी बताया । हर माह समुदाय में संस्था द्वारा वाते पत्रिका के माध्यम से तकनीकी पूर्ण जानकारी पहुँचाने के लिए बहुत - बहुत आभार व्यक्त करता हूँ ।

नाम : दीता डामोर
गाँव का नाम :झोसली
मोबाइल नं. : 8085116165
ब्लाक – थांदला (म.प्र.)

वाते पत्रिका के संदर्भ में समुदाय कि राय

मैं लम्बे समय से वाते पत्रिका पढ़ रहा हूं| हर महीने पत्रिका से नयी- नयी जानकारी मिलती है जिसमे सच्ची खेती, सच्चा स्वराज, सच्चा बचपन के साथ ही संस्था सचिव का संदेश जिसमे वे हमेशा समुदाय से आग्रह करते है बदलाव के लिए, सचिव महोदय के हर माह दिए जाने वाले संदेश से मै बड़ा प्रभावित हूं | मैने अलग- अलग प्रकार की जानकारी वाते पत्रिका से प्राप्त कि है| सच्चा स्वराज के तहत समुदाय स्तर पर आत्मनिर्भर बनाने के लिए सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है । वाते पत्रिका द्वारा जैविक खाद्य, जैविक दवाई के बारे में जानकारी मिलती है। वाते पत्रिका के द्वारा समुदाय स्तर पर स्वराज संगठन विभिन्न प्रकार के कार्यो में पंचायतो के साथ मिलकर विकास कार्यो में मदद कर रहा है जैसे वंचित परिवारों सरकारी योजनाओ से जोड़ना, श्रमिक अधिकारों के साथ ही बाल शिक्षा को लेकर जागरूकता मिल रही है ।

वाते पत्रिका के माध्यम से समुदाय स्तर पर लोगों में पालनहार योजना के बारे में जागरूकता बढ़ी है ।

नाम : तोल सिंह कटारा
गाँव का नाम : सासा वडला
ब्लाक – सज्जनगढ़

वाते पत्रिका के संदर्भ में समुदाय कि राय

वाते पत्रिका पढ़ने के बाद मैंने अपने आप में बदलाव पाया है मेरी सोचने, समझने कि क्षमता बढ़ी है जिससे नयी-नयी जानकारी समाज के साथ साझा करता हूं तो लोग मुझे सुनते है और मेरा समुदाय से अच्छा जुड़ाव होने लग गया है| वाते पत्रिका से हमें सच्ची खेती के बारे में जानकारी मिलती है । पत्रिका के माध्यम से हमें हमारे सवैधानिक अधिकारों के बारे में जानकारी मिलती है । वाते पत्रिका से हमें जैविक दवा, जैविक खाद और जैविक खेती करने की जानकारी मिलती रहती है| वाते पत्रिका के माध्यम से हमें परम्परागत कृषि पद्धति के बारे में जानकरी मिलती है । इस पत्रिका को पढ़कर किसान साथियों को मौसम के अनुरूप खेती के विभिन्न प्रकार के तरीके सिखने को मिले जिसमे दसपर्णी,जीवाअमृत ,पोषण वाटिका आदि के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी मिल जाती है ।

वाते पत्रिका के माध्यम से पशुओ के रखरखाव के बारे में भी ज्ञान मिल जाता है । पत्रिका के माध्यम से हमें बाल अधिकारों व अपने अधिकारों के बारे में जानकरी मिल जाती है । पत्रिका से यह भी सिखा है की बीज अवेरना कैसे है, देशी बीज का भडारण कैसे होगा, उसमे क्या क्या चीजे दवाई के रूप में उपयोग में ले सकते है आदि । आदिवासी रीती -रिवाज ,संस्कृति के बारे में जानकारी पत्रिका से मिल जाती है । इसके साथ मौसमी सब्जियां, उन पर होने वाली बीमारीयों के बचाव के बारे में जानकारी वाते पत्रिका से मिल जाती है ।

नाम : मोहन लाल अड़
पिता का नाम :वारजी अड़
गाँव : सुखेडा
ब्लाक – सज्जनगढ़

वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग करे साथ ही गाड़ी कि स्पीड कम रखे... क्योकि परिवार आपकी प्रतिक्षा कर रहा है |

पशुधन स्वराज : सर्दियों के मौसम में बेहतर पशु प्रबंधन

आदिवासी अंचल में घर कच्चे होते है| शीत ऋतु के पूर्व पशुधन आवास की उचित व्यवस्था की चिंता होना स्वाभाविक होती है |

हमारे पशुधन की देखभाल करना भी हमारी जिम्मेदारी है। हमेशा स्वच्छ वातावरण में रहने से पशु निरोगी व प्रसन्न रहते है। पशुओं के लिये स्वस्थ्य, साफ-सुथरा व हवादार आवास का निर्माण करें क्योकिं इससे पशुओं की उत्पादकता और कार्य क्षमता पर वातावरण और रहन- सहन का बहुत असर पड़ता है । यदि उनकी देखभाल ठीक से न की जाये तो उनको कई तरह के रोग लग सकते है।

पशुओं का घर बनाने के लिये सुखी और जमीन से थोड़े ऊँचे स्थान का चुनाव करना चाहिये । पशु घर के लिये जमीन ढालू होनी चाहिये । सूर्य का प्रकाश, ताजी हवा तथा पीने के पानी का प्रबन्धन पर्याप्त मात्रा में होना चाहिये। पशु आवास कभी भी नहर, नदी, तालाब, या गड्ढों के आस-पास नहीं बनाना चाहिये । पशु को एक बांस या लकड़ियों से घिरी हुई बागड़ अर्थात मिट्टी गोबर से लीपी दीवारों के अंदर खुला छोड़ दिया जाता है उसके खाने की व्यवस्था भी वही कर दी जाती है जिसे सामूहिक आहार की व्यवस्था रहती है। ऐसी व्यवस्था में समय-समय पर पशुओं को चारा नाद में दिया जाता है और पानी की व्यवस्था वही कर दी जाती है । जब मन में आता है, तब चारा खाता और पानी पिता है, बाड़े में टहल सकता है । यह विधि बहुत ही उत्तम पाई गयी है । गाय, बैल, भैंस, बकरी, आदि पालतू पशुओं को खिलाये जाने योग्य सभी चीजें 'पशुचारा' या 'पशु आहार' कहलातीं हैं। पशु को 24 घंटों में खिलाया जाने वाला आहार (दाना व चारा) जिसमें उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पोषक तत्व मौजूद हों, पशु आहार कहते हैं। जिस आहार में पशु के सभी आवश्यक पोषक तत्व उचित अनुपात तथा मात्रा में उपलब्ध हों, उसे संतुलित आहार कहते हैं।

दुधारू पशुओं के शरीर के भार के अनुसार उसकी आवश्यकताओं जैसे जीवन निर्वाह, विकास, तथा उत्पादन आदि के लिये आहार में विभिन्न तत्व जैसे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज, विटामिन्स (पोषक तत्वों) तथा पानी की आवश्यकता होती है।

पशुओं में आहार की मात्रा उसकी उत्पादकता तथा प्रजनन की अवस्था पर निर्भर करती है।

पशु को कुल आहार का 2/3 (70%) भाग मोटे चारे से तथा 1/3 (30%) भाग दाने के मिश्रण द्वारा मिलना चाहिये।

मोटे चारे में दलहनी तथा गैर दलहनी चारे का मिश्रण दिया जा सकता है। दलहनी चारे की मात्रा आहार में बढ़ाने से काफी हद तक दाने की मात्रा को कम किया जा सकता है। वैसे तो पशु के आहार की मात्रा का निर्धारण उस के शरीर की आवश्यकता व कार्य के अनुरूप तथा उपलब्ध भोज्य पदार्थों में पाये जाने वाले पोषक तत्वों के आधार पर दिया जाता है लेकिन पशुपालकों को गणना कार्य की कठिनाई से बचाने के लिये सामान्य नियम को अपनाना अधिक आसान है।

जैसा की हम सब जानते है कि सर्दियों का मौसम शुरू हो चुका है । इस मौसम में छोटे, बड़े और दुधारू पशुओं के प्रबंधन और खिलाई-पिलाई के प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है । जरा सी लापरवाही पशुपालन को घाटे का सौदा बना सकती है । ऐसे में अपने पशुओं का ध्यान कैसे रखें, यह पूरी जानकारी इस लेख में आपके साथ साझा कर रहे है :

❖ **पशुओं को दें संतुलित आहार** : सर्दियों के दिनों में ज्यादातर गाय-भैंस दूध दे रही होती हैं । इसलिए उनको दुग्ध उत्पादन के अनुपात के अनुसार उन्हें संतुलित आहार देने की आवश्यकता होती है । संतुलित आहार बनाने के लिए 55 प्रतिशत खली, 30 प्रतिशत दालों और चने का चोकर, 10 प्रतिशत खनिज लवण मिश्रण और 5 प्रतिशत नमक मात्रा में लेकर तैयार किया जा सकता है। दुधारू पशुओं के अलावा गर्भवती पशुओं को भी सर्दियों में एक से दो किग्रा संतुलित आहार देते रहना चाहिए । सूखे चारे के रूप में अगर करवी या भूसा खिला

रहे हैं तो उसमें हरे चारे के रूप में बरसीम और जई का हरा चारा मिलाकर खिलाना चाहिए । सर्दियों में दुधारू पशुओं से अधिक दुग्ध उत्पादन करने के लिए अधिक मात्रा में हरे चारे के रूप में बरसीम और जई को खिलाना चाहिए। छोटे पशु जैसे बकरियों को सर्दियों के दिनों में अरहर, चना, मसूर का भूसा भरपेट खिलाना चाहिए ।

❖ **नमी से बचाव** : सर्दियों में बकरियों को सुबह-शाम ओस के दौरान चरने के लिए नहीं छोड़ना चाहिए। अधिक ऊर्जायुक्त आहार दें सर्दियों में दुधारू पशुओं को उर्जा प्रदान करने के लिए समय-समय पर शीरा अथवा गुड़ अवश्य खिलाते रहना चाहिए । इस मौसम में गाय-भैंस के बच्चों और बकरियों को 30 से 60 ग्राम गुड़ जरूर खाने को देना चाहिए । बकरियों को 50 ग्राम और बड़े पशुओं को 200 ग्राम तक मेथी सर्दियों में प्रतिदिन खिलाने से जाड़े से बचाव होता है और साथ ही दूध उत्पादन भी अच्छा होता है । बकरियों को अधिक हरे चारे की जगह नीम, पीपल, जामुन, बरगद, बबूल आदि की पत्तियां खिलाना चाहिए । सर्दियों में दुधारू पशुओं को चारा-दाना खिलाने, पानी पिलाने व दूध दोहन का एक ही समय रखें । अचानक बदलाव करने से दूध उत्पादन प्रभावित हो सकता है ।

- ✓ पशु आवास की करें उचित व्यवस्था : पशुओं को सर्दियों से बचाने के लिए विशेष प्रबंधन करने की आवश्यकता होती है क्योंकि ठंड लग जाने पर दुधारू पशुओं के दूध देने की क्षमता पर बुरा असर पड़ता है ।
- ✓ गाय-भैंस के छोटे बच्चों और भेड़-बकरियों पर जाड़े का घातक असर होता है । कई बार इन पशुओं के बच्चे ठंड की गिरफ्त में आकर निमोनिया रोग के शिकार बन जाते हैं । इसलिए जाड़े के दिनों में दुधारू पशुओं के साथ-साथ छोटे पशुओं की भी विशेष देखभाल की जरूरत होती है । पशुओं को ठंड से बचाने के लिए बाड़े के खुले दरवाजे और खिड़कियों पर टाट लगाए जिससे ठंडी हवा बाड़े में सीधे अंदर न आ सके ।
- ✓ पशुओं के बांधने की जगह पर नमी नहीं होनी चाहिए। अगर नमी होती है तो साँस लेने संबंधी रोग और निमोनिया हो सकता है । नमी वाले स्थान पर साफ-सफाई करने के बाद चूने का छिड़काव कर दें ।
- ✓ बाड़े को दिन में दूध निकालने के बाद खुला छोड़ दें, जिससे उसमें हवा का संचार हो सके । बाड़े को हमेशा सूखा और रोगाणु मुक्त रखें । इसके लिए साफ-सफाई करते समय चूना, फिनायल आदि का छिड़काव करते रहना चाहिए ।
- ✓ आग और धूप से तपाएं : ठंड से बचाव के लिए सुबह-शाम और रात को टाट की पल्ली उढ़ा दें। बाड़े में रात को सूखी बिछावन का प्रयोग करें जिसे सुबह हटा देना चाहिए। पशुओं के नवजात बच्चों को सर्दी से बचाने के लिए उन्हें ढककर सूखे स्थान पर बांधे और रात को अधिक ठंड होने पर आग जलाकर बाड़े में गर्माहट बनाये रखना चाहिए।
- ✓ दिन के समय खुली धूप में रखें : ठंड में दिन के समय सभी पशुओं को बाहर खुली धूप में रखें जिससे ठंड के बचाव के साथ-साथ उनके शरीर का रक्त संचार भी अच्छा रहता है।
- ✓ स्वच्छ और ताजा पानी ही पिलायेः पशुओं के लिए भी बाड़े में स्वच्छ और ताजा पानी का प्रबंध होना जरुरी है। पानी की कमी से पशुओं के स्वास्थ्य पर असर पड़ता है और उनका दूध उत्पादन भी प्रभावित होता है। इसलिए सर्दियों में पशुओं को तालाब, पोखर, नालों, और नदियों का गंदा और दूषित पानी बिल्कुल न पिलाएं बल्कि उन्हें दिन में तीन से चार बार साफ-स्वच्छ पानी पिलाना चाहिए। अगर पशु होद बनी है तो होद को बिना बुझे चूने से पुताई करने के साथ ही नीचे भी चूना डाल दें। इससे पानी हल्का, स्वच्छ होने के साथ काफी हद तक पशुओं के शरीर की कैल्शियम की पूर्ति भी करता है।

❖ **नवजात व पशुओं का स्वास्थ्य प्रबंधनः** नवजात एवं बढ़ते पशुओं को सर्दी व शीत लहर से बचाव की विशेष आवश्यकता होती है। इन्हें रात के समय बंद कमरे या शेड के अंदर रखना चाहिए। प्रवेश द्वार का पर्दा या दरवाजा हल्का खुला रखा जाए। तिरपाल, पॉलीथीन शीट या टाट का पर्दा प्रयोग करके पशुओं को तेज हवा से बचाया जा सकता है। सर्दी में पैदा वाले बछड़ों के शरीर को बोरी, पुआल से रगड़ कर साफ करना आवश्यक है ताकि इनके शरीर को गर्मी मिलती रहे और रक्त संचार भी बढ़े।

❖ **समय पर गर्भाधानः** सर्दियों के दिनों में अधिकतर भैंस गर्मी (हीट) पर आकर गर्भधारण करती है। पशु पालकों को भैंस के गर्मी के लक्षण दिखने पर 12 से 24 घंटे के बीच में दो बार अवश्य ग्याभन करा दें। ब्याने के 2.5 से 3 महीने के भीतर गाय-भैंस ग्याभिन हो जानी चाहिए। गाय-भैंस को उचित समय पर गर्मी पर लाने और ग्याभन कराने के लिए उन्हें नियमित रूप से 50 ग्राम विटामिन युक्त खनिज लवण मिश्रण अवश्य खिलाना चाहिए।

❖ **सर्दियों में होने वाले रोगों से बचाव** : सर्दियों में पशुओ को सामान्यतः निम्नलिखित रोग होते है, जिनका विवरण और बचाव के उपाय निम्नानुसार है :

थनैला से बचाव : सर्दियों में दुधारू पशुओं के अक्सर थन चटक जाते हैं या थनों में सूजन आ जाती है। इससे दूध दोहन में परेशानी के साथ ही थनैला बीमारी पनपने की आशंका बन जाती है। इसके बचाव के लिए दूध निकालने के बाद कम से कम आधा घंटा पशुओं को जमीन पर बैठने ना दें। थनैला रोग के बचाव के लिए दूध दोहन बाद थनों को पोटेशियम परमेगनेट के घोल से साफ करना चाहिए ।

अंतः परजीवियों से बचाव सर्दियों के दिनों में परजीवी भी पशुओं को नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे दुग्ध उत्पादन प्रभावित होता है, साथ ही नवजात बच्चों को दस्त, निमोनिया होने का खतरा रहता है। अक्टूबर तक पैदा होने वाले ज्यादातर भैंस के बच्चे बड़ी तादाद में सर्दियों का मौसम खत्म होने तक मौत के मुंह में चले जाते हैं, जिसकी मुख्य वजह अंतःपरजीवी का होना है। सर्दियों में बकरियों में लीवर फ्लू भी हो जाता है। इन पशुओं को अंतः परजीवी से बचाने के लिए शरीर के भार (वजन) के अनुसार कृमि नाशक दवाएं अल्बोमार, निलवर्म, जानिल आदि देते रहना चाहिए ।

बाहय परजीवियों से बचाव सर्दियों के दिनों में जाड़ा लग जाने के डर से ज्यादातर किसान अपने पशुओं को नहलाते ही नहीं हैं। जाड़ों में पशुओं के शरीर की साफ सफाई नहीं होने के कारण पशुओं के शरीर पर बाह्य परजीवी कीट जैसे जूं, पिस्सू, किलनी का प्रकोप बढ़ जाता है। यह सभी पशुओं का खून चूसकर बीमारी का कारण बनते है, इसलिए जाड़े में पशुओं की साफ- सफाई का बहुत ध्यान रखें। धूप निकलने पर सप्ताह में दो से तीन बार पशुओं को नहलाये। बाहरी कीट के बचाव के लिए 1 लीटर पानी में बूटॉक्स और क्लीनर दवा की दो मिलीलीटर मात्रा घोलकर रोगी पशु के शरीर पर ठीक तरीके से लगा दें । इसके 2 घंटे बाद उस पशु को नहलाये।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – मानगढ़

सफलता कि कहानी

नाम – मनीषा डामोर
लिंग – महिला
पति का नाम – रमण लाल डामोर
आयु- 28 वर्ष
गाँव – सेरा नगला
योग्यता –बी.ए
वैवाहिक स्थिति – विवाहित
बच्चे – 3 लडकीयाँ
एक लड़की स्कूल जाती है 2 अभी छोटी है |

पूर्व की स्थितिः- मेरे परिवार का भरण – पोषण करने कि जिम्मेदारी मेरे पति रमणलाल व मेरे ऊपर थी, परिवार का गुजारा करना मुश्किल हो रहा था है इस वजह से हम परिवार सहित गुजरात पलायन करते | मेरे पास कमाने का कोई अन्य जरिया नहीं था क्या काम करू कुछ समझ नहीं आ रहा था| मेरी समझ से बाहर था मेरी आर्थिक स्थिति बहुत ख़राब थी |इस कारण मेरा परिवार गुजरात पलायन करते | इस दौरान होली त्योंहार पर परिवार सहित गाँव आ गये , इस दौरान तब मुझे पता चला की मेरे गाँव में वाग्धारा संस्था का कार्य चल रहा है जिसके तहत ग्राम स्वराज समूह, सक्षम समूह एवं स्वराज संगठन बने हुए है जिनकी मासिक बैठक होती है | मै सक्षम समूह कि बैठक में गयी | मेरे को बहुत सारी जानकारी मिली तो वहाँ उपस्थित वाग्धारा संस्था के कार्यकर्त्ता कांता डामोर से मैने समूह में जुड़ने की इच्छा जताई फिर मैं समूह की सदस्य 2019 में बनी, एक साल तक प्रति माह बैठक में भाग लेती| इस दौरान मुझे संस्था से किचन गार्डन के लिए बीज व फलदार पौधे मिले | मेरे पति भी ग्राम स्वराज समूह से जुड़े और ग्राम विकास के सबंध जानकारी प्राप्त करने लगे |

चुनौतियां :- जब मै समूह से जुड़ी तब किचन गार्डन के बीज लगाने के बाद उनको नियमित पानी देने कि समस्या थी क्योकि हमारे पास पानी कि सुविधा उपलब्ध नही थी |

बदलाव – मेरे पति रमण लाल द्वारा ग्राम सभा में हेंडपंप का आवेदन किया इसके उपरांत ग्राम पंचायत सेरा नगला द्वारा हैडपंप लगवाया गया | जिससे पानी कि सुविधा हो गई | पानी कि उपलब्धता होने के बाद मैने किचन गार्डन में टमाटर, बैगन, हल्दी , अदरक , भिंडी, ग्वार, लोकी हर प्रकार कि सब्जियों का उत्पादन करने लगी , जिससे मेरे मुझे बाज़ार पर निभर नही होना पड़ा और मुझे पैसों कि बचत होने लगी | इस दौरान गाँव के लोग मेरे घर पर सब्जियाँ लेने आने लगे, जिससे मुझे प्रतिदिन 200 रूपये कि आमदनी घर पर ही होने लगी| आमदनी होने के उपरांत मेरे पति को किराणा कि दूकान लगवाई, इस दुकान से मेरे परिवार को प्रतिदिन 700 से 1000 रूपये कि आमदनी होने लगी | इस तरह आमदनी बढने पर 6 माह के भीतर ही आटा चक्की खरीद ली, इस प्रकार कुल मिलाकर वर्ष भर में मुझे 3,600,00 रूपये कि आमदनी होने लगी |

जब आमदनी हुई तो हमने किचन गार्डन का विस्तार करते हुए और अधिक सब्जियों का उत्पादन लेने लगे जिससे आमदनी बढ़ती गयी और मेरे पति को वर्ष भर में पिक -अप गाडी खरीद कर दिलवाई जिससे सब्जियों एवं आस पास के गाँवो में भी सब्जियां बेचने लगे जिससे लोगो में जान पहचान बढने से मेरे पति को और अन्य काम मिलने लगा जिसमे अनाज शहर तक गाडी के मध्यम से पहुचना, टेंट का सामान कार्यक्रम स्थल पर पहुँचाना, इस प्रकार धीरे – धीरे अनुभव होने पर मेरे पति को भी टेंट सामान कि दूकान लगवाई , जिससे हमे अपने परिवार कि आमदनी बढ़ाने में मदद मिली | इस प्रकार एक वर्ष में लगभग 4,35000 रूपये कि आमदनी होने लगी है |

इस प्रकार वाग्धारा संस्था ने काफी सहयोग करते हुए तकनीकी जानकारियां उपलब्ध करवाई| और आज मेरा परिवार पलायन पर नही जाकर घर पर ही अच्छा जीवन जी रहा है हम सब बहुत खुश है| मुझे व मेरे परिवार को समय समय पर सहयोग व मार्गदर्शन करने के लिए वाग्धारा संस्था को बहुत- बहुत धन्यवाद व आभार |

SCAN ME
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -radio@vaagdhara.org
यह "वातें वाग्धारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

संकलन एवं सहयोग : जागृती भट्ट, बाबुलाल चौधरी ।